International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 714-715

प्रसाद की साहित्य सेवा

डॉ0 जयराम त्रिपाठी

सहा0 प्रोफेसर (हिन्दी), हेमवती नंदन बहु0 राज0 स्नातको0 महा0, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

जयशंकर प्रसाद के साहित्य का अध्ययन करते हुए हम यह मानने पर विवश हो जाते हैं कि यदि प्रतिभा किसी साहित्यकार को प्राप्त हुई है तो वह महान् साहित्य की रचना कर सकता है भले ही उसे विद्यालय और महाविद्यालय से शिक्षा न प्राप्त हो पाई हो। प्रसाद ने साहित्य के दोनों रूपों में (गद्य एवं पद्य) साहित्य सृजन किया। गद्य में आलोचना, नाटक, कहानी और उपन्यास इन सभी रूपों में विपुल साहित्य की रचना की। जयशंकर प्रसाद एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण साहित्यिक घटना के साक्षी एवं कर्ता–धर्ता थे वह भी काव्य की भाषा का ब्रज से खड़ी बोली में स्थानान्तरण। प्रसाद की प्रारंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा में थीं जो चित्राधार में संकलित हैं।

मूल शब्द : जयशंकर प्रसाद, आधुनिक शिल्प, लोक मंगल एवं भारतीय जनमानस

प्रस्तावना

प्रसाद के साहित्य का अध्ययन उनकी विशिष्टताओं की तरफ ध्यान आकर्षित कर लेता है, कुछ रचनाओं को छोड़ दें तो प्रसाद का सम्पूर्ण साहित्य अतीत की सृदृढ़ नीव पर स्थापित है, उन्होनें भारतीय इतिहास के स्वर्णकाल को अपनी कथावस्तु के रूप में अपनाया है, इस क्रम में यह भी ध्यान देने योग्य है कि प्रसाद वेद और पुराणों को भी भारतीय इतिहास की परंपरा में स्थान देते हैं और उनके विख्यात मिथकों को अपने साहित्य का आधार बनाते हैं। प्रसाद ने ऐतिहासिक कथ्य के साथ साहित्य में आधुनिक शिल्प को अत्यंत सफलता पूर्वक अपनाया है, शिल्प की यह आधुनिकता उनकी भाषा एवं वर्णन शैली दोनों में दिखाई पड़ती है। पुनरुत्थानवादी सोच के प्रखर उद्घोषक प्रसाद के साहित्य में हम मानव प्रेम, प्रकृति प्रेम के साथ–साथ अपनी ऐतिहासिक परंपरा एवं राष्ट्र प्रेम का दर्शन पंक्ति–पंक्ति में करते चलते हैं। इस संदर्भ में ध्यान देने वाली विशेष बात यह है कि इतिहास से प्रेम होने के बाद प्रसाद कहीं भी आधुनिक मूल्यों के विरोध में नहीं दिखाई पड़ते हैं, उन्होनें अपने अंतिम पूर्ण नाटक ध्रुवस्वामिनी में विवाह–विच्छेद जैसी सोच को स्थापित किया है और यह दिखाया है कि जो रूढ़ियाँ मनुष्य के जीवन को कष्टमय बना रही हैं उन्हें जितना शीघ्र दूर कर लिया जायेगा, मानवता के लिए वह उतना ही लाभप्रद होगा। अपनी कालजयी कृति 'कामायनी' में उनका उद्घोष है–

''शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं हो निरुपाय।
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।।''

साहित्य का लक्ष्य मानवता की विजय की अभिलाषा है। उनके नाटक अपने युग की उपज माने जाते हैं, तत्कालीन सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप उनके सम्पूर्ण साहित्य में देखा जा सकता है। युग–चेतना की अभिव्यक्ति उनके साहित्य का प्राण है आचार्य शुक्ल ने यह स्वीकार किया है कि यद्यपि प्रसाद के नाटक ऐतिहासिक हैं परन्तु उनमें आधुनिक आदर्शों एवं भावनाओं का आभास इधर–उधर बिखरा हुआ मिलता है, स्कन्दगुप्त एवं चंन्द्रगुप्त दोनों में स्वदेश प्रेम, विश्वप्रेम एवं आध्यात्मिकता का आधुनिक रंग रूप बराबर झलकता है। अपनी जन्म भूमि के प्रति प्रसाद की धारणा ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' के सिद्धान्त की पोषक थी। देश प्रेम और स्वातंन्त्र्य की भावना का वर्णन स्थान–स्थान पर उनके द्वारा किया गया।

अपने नाटक 'चन्द्रगुप्त' में उन्होंने लिखा है–

''अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।''

प्रसाद का काल पराधीनता का काल था युग चेता कवि से यह अपेक्षा होती है कि वह सुप्त जनमानस की लुप्तप्राय चेतना को नवीन युग संदर्भ में जाग्रत कर लोक मंगल में प्रवृत्त करेगा। उनका संदेश नित्य नूतन आंनद की सृष्टि करने वाला कर्म सौंदर्य का संदेश है। उन्होंने कहा–

''तप नहीं केवल जीवन सत्य
करुण यह क्षणिक दीन अवसाद''।

अर्थात् वैराग्य में आस्था रखकर और तपस्वी बनकर आनंद वाद का चरम लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता अतः तप को अंतिम लक्ष्य अथवा अंतिम सत्य स्वीकार नहीं किया जा सकता।

पुनर्जागरण के लिए प्रसाद ने भारतीय जनमानस में यह भावना भरने का प्रयास किया कि तुम्हारा अतीत अत्यंत गौरवशाली था और इस भावना को लोगों के दिलों से मिटाया कि तुम पिछड़े हुए धर्म और जाति से आये हो। इसीलिए उन्होनें

भारतीय इतिहास के स्वर्ण काल को अपना उपजीव्य बनाया उन ऐतिहासिक पात्रों को महत्व प्रदान किया जो किसी न किसी विदेशी आक्रान्ता को भारत में आक्रमण करने पर मुँहतोड़ जवाब दे चुके थे।

प्रसाद के साहित्य का महत्व बताते हुए पुरुषोत्तम दास अग्रवाल ने लिखा है 'प्रसाद ने पुरानी बोतलों में नई शराब भरी है, उनका उद्देश्य देश में नव–चेतना लाने के कारण शुद्ध राष्ट्रीय है.....देश को एक सूत्र में बाँधने का काम स्कन्धगुप्त करता है। रामा अपने पति को राष्ट्रीय कार्य में भाग लेने की प्रेरणा देती हैं।''[1]

नाटक और कहानियों में प्रसाद ने मनुष्य के मनोभावों को बहुत कुशलता पूर्वक चित्रित किया है। प्रभाकर श्रोत्रिय ने उन पर विचार करते हुए लिखा है–

''प्रसाद की भाव–चेतना व्यक्तित्व और संबंधों के अदृश्य कुहासे को चीरती हुई सत्य का साक्षात्कार करती है, वह पाठक के अंतः चक्षुओं को खोलती है, उसे औचित्य और विवेक देती है, अधिक संवेदनशील और मानवीय बनाती है।''[2]

मानवीय सम्बन्धों के कुशल चितेरे प्रसाद ने दुखान्त और सुखान्त के अतिरिक्त एक और विधा विकसित की जिसे हम प्रसादान्त के नाम से जानते हैं, इस प्रकार के समापन में एक कारुणिक दृश्य का सृजन होता है। जयशंकर प्रसाद के अध्ययन के क्रम में आचार्य शुक्ल ने लिखा है ''स्थान–स्थान पर प्रकृति की मधुर, भाव और आकर्षक विभूतियों की योजना का तो कहना ही क्या है। प्रकृति के ध्वंसकारी भीषण रूप वेग का भी अत्यंत व्यापक परिधि के बीच चित्रण हुआ है।''[3]

सही अर्थों में प्रकृति प्रसाद के लिए अमूर्त न होकर एक मूर्त–जीवित सत्ता है जो उसके सुख–दुःख में उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती है।

''वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का आज लगा हँसने फिर से।
जगीं वनस्पतियाँ अलसाईं, मुख धोती शीतल जल से।।''

प्रसाद ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का बड़ा मनोहारी वर्णन किया है कामायनी में रात्रि वर्णन के क्रम में उन्होनें लिखा है–

''आ रही थी मदिर भीनी
माधवी की गंध''

प्रकृति के भयंकर रूपों का भी वर्णन उनके काव्य में प्रचुर मात्रा में है। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि प्रसाद ने अपने साहित्य के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया है बल्कि समाज को भी उसके निर्माण हेतु पर्याप्त प्रेरणा प्रदान की है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 पुरुषोत्तम दास अग्रवाल : ध्रुव स्वामिनी का शास्त्रीय विवेचन (प्रेम प्रकाशन मंदिर–दिल्ली, 1972) पृष्ठ–173
2. प्रभाकर श्रोत्रिय : कवि परंपरा/तुलसी से त्रिलोचन (भारतीय ज्ञानपीठ–2006) पृष्ठ–76
3. आचार्य राम चंद्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास (नागरी प्रचारिणी सभा काशी–1999) पृष्ठ–37ै